लोरी के रूप में मां के मुंह से उपजा बाल साहित्य

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। साहित्य अकादेमी दिल्ली के दो दिवसीय आयोजन के दूसरे दिन हिंदी संस्थान के निराला सभागार में चले बाल साहिती के सत्रों में संगोष्ठी, काव्य समारोह के संग पुरस्कृत लेखकों ने अनुभव साझा किये। संगोष्ठी के अध्यक्षीय उद्बोधन में ओड़िया विद्वान दाश बेनहुर ने कहा कि बाल साहित्य 18वीं सदी में नहीं शुरू हुआ, लोरी के रूप में मां के मुंह से बाल साहित्य का उदय हुआ। आश्चर्य है कि बाल साहित्य नज़रअंदाज होता रहा है। विडम्बना है कि प्रथम प्रधानमंत्री साहित्य अकादमी के पहले अध्यक्ष रहे पर उनके समय में बाल साहित्य पुरस्कार नहीं शुरू हो पाये। बच्चों के लिए लिखते समय मां की तरह सोचना और आगे बढ़ना चाहिए। अजय कुमार शर्मा के संचालन में चली संगोष्ठी में बांग्ला रचनाकार उल्लास मलिक ने बांग्ला बाल साहित्य के लेखन का हवाला देते हुए उसके इतिहास को सामने रखा। स्थानीय साहित्यकार जाकिर अली रजनीश ने कहा कि विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो बहुत सी बाल कहानियों ने नुकसान अधिक पहुंचाया है। अनंत कुशवाहा की कहानी इंदरमन साहू की कहानी अधजले पांब, बांध के चूहे व प्यासा पुल, अरशद खान की कहानी पानी पानी रे व गुल्लक के संग अन्य कई उत्कृष्ट कहानियों की चर्चा करते हुए कहा हिन्दी बाल साहित्य अब भी उपदेश और नीति कथाओं के जाल में उलझा हुआ है।

8 पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए अनुभव शब्द से ज्यादा बच्चों के मन को छूती है लय

हर रचनाकार की अपनी अलग रचना प्रक्रिया और अनुभव होते हैं, उन्हीं से उसका साहित्य उपजता है। बाल साहित्य रचने की राह आसान नहीं है और यह डिजिटल दौर में और भी मुश्किल हो गया है। उक्त निष्कर्ष बाल साहित्य पुरस्कार 2024 से पुरस्कृत लेखकों ने आज अपनी रचना प्रक्रिया से लेखक सम्मिलन में श्रोताओं से साझा किये तो श्रोताओं के सामने आया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने की।